शत सृष्टि तांडव रचयिता, नटराज राज नमो नमः ।
हे आद्य गुरु शंकर पिता, नटराज राज नमो नमः ॥

गंभीर नाद मृदङ्गना, धबके उरे ब्रह्माडना ।
नित होत नाद प्रचण्डना, नटराज राज नमो नमः॥

शिर ज्ञान गंगा चन्द्रमा, चिद्ब्रह्म ज्योति ललाट मां ।
विषनाग माला कंठ मां, नटराज राज नमो नमः ॥

तवशक्ति वामाङ्गे स्थिता, हे चंद्रिका अपराजिता ।
चहुं वेद गाये संहिता, नटराज राज नमोः ॥

पहले श्लोक का अर्थ:

सत सृष्टि तांडव रचयिता
नटराज राज नमो नमः ।
हे आद्य गुरु शंकर पिता
नटराज राज नमो नमः ॥

- सत सृष्टि तांडव रचयिता: सत्य के सृष्टि (सृजन) के तांडव के रचयिता।
- नटराज राज नमो नमः: नटराज के राजा को नमस्कार।
- हे आद्य गुरु शंकर पिता: हे प्रारंभिक गुरु और शिव के रूप में पिता।
- नटराज राज नमो नमः: नटराज के राजा को नमस्कार।

दूसरे श्लोक का अर्थ:

गंभीर नाद मृदंगना
धबके उरे ब्रह्माडना ।
नित होत नाद प्रचंडना
नटराज राज नमो नमः ॥

- गंभीर नाद मृदंगना: गहरी आवाज़ और मृदंग की ध्वनि।
- धबके उरे ब्रह्माडना: ब्रह्मांड में गूंजती है।
- नित होत नाद प्रचंडना: प्रतिदिन प्रचंड ध्वनि उत्पन्न होती है।
- नटराज राज नमो नमः: नटराज के राजा को नमस्कार।

तीसरे श्लोक का अर्थ:

शिर ज्ञान गंगा चंद्रमा
चिद्ब्रह्म ज्योति ललाट मां ।
विषनाग माला कंठ मां
नटराज राज नमो नमः ॥

- शिर ज्ञान गंगा चंद्रमा: ज्ञान के प्रतीक गंगा और चंद्रमा।
- चिद्ब्रह्म ज्योति ललाट मां: उनके ललाट में चिद्ब्रह्म की ज्योति (प्रकाश)।
- विषनाग माला कंठ मां: उनके गले में विष नाग की माला।
- नटराज राज नमो नमः: नटराज के राजा को नमस्कार।

चौथे श्लोक का अर्थ:

तवशक्ति वामांगे स्थिता
हे चंद्रिका अपराजिता ।

चहु वेद गाए संहिता
नटराज राज नमोः ॥

- तवशक्ति वामांगे स्थिता: तुम्हारी शक्ति तुम्हारे बाएँ अंग में स्थित है।
- हे चंद्रिका अपराजिता: हे चंद्रमा के समान अप्रतिहत (अपराजित)।
- चहु वेद गाए संहिता: चारों वेद तुम्हारी स्तुति गाते हैं।
- नटराज राज नमो नमः: नटराज के राजा को नमस्कार।

यह भजन भगवान शिव की महानता, उनकी शक्ति और उनके तांडव नृत्य को समर्पित है। नटराज के रूप में, शिव को नृत्य का देवता माना जाता है और यह भजन उनके अद्वितीय रूप की वंदना करता है।

निश्चित रूप से, यह भजन भगवान शिव के नटराज रूप की महिमा और उनके विभिन्न गुणों को रेखांकित करता है। यहाँ कुछ और विवरण प्रस्तुत हैं: